

वे.रा.

१२४

भव भक्तकर्म आचार १३१ करुना कर जलतिथिने
प्रगटे स्या कलसलै हाथ ॥ आय वेद विस्तारन का
रण सकल ब्रह्मउके नाथ १३८ तन्नी उष्ट वळे जो भव
परलियो कल अवतार ॥ परसराम कै कै दिजयापे
हूँ कियो भवभार १३५ खजल वेश वत्तर चूडाम
नि प्रहृषोत्तम अवतार ॥ दशरथके गृह जन्म लि

यो हरिरूपराससुखमाद १४० रावणा जेभकरन प्रस
राधियवडे सकलजग माहे ॥ सवर्द्धिन लोकपाल
उतजीते कोऊ बोव्यो नारे १४१ सकल देव मिलजा
य प्रकारे चतुराननके पास ॥ लै शिव संगे चले च
तुराननहीरसिंधुसाववास १४२ अस्तुति करिव
हु भोति जगाये तब जाये निज नाथ ॥ आज्ञा दई

वे.रा.

१२५

जाय कपिजलमै प्रगटे सब सरसाय १४३ तब ब्रह्मा
सब दिन सो भाष्यो सोई सब सर कीन्ही ॥ सानो दीप
जाय कपिजलकमै आय जन्म सर लीन्ही १४४ अपने अं
श आय हरि प्रगटे पुरुषोत्तम निजरूप । नाशयण अ
वभार हरोहै अति आनंद स्वरूप १४५ वासुदेव यो कह
त वेदमै है हरन अवतार ॥ शेष सहस्र सात रत्न

निरंतर तऊत पावत पार १४६ सहस्र वर्ष लो ध्यान
कियो शिव राम चरित सख सार । अव गारन करि
कै सब देख्यो तऊत पायो पार १४७ विनी समाधि
सनी तब हक्यो कहो परम गुरु ईश ॥ काको ध्यान
करत उर अंतर को हरण जगदीस १४८ तब शिव क
ह्यो राम गुरु गोविंद परम इष्ट एक मेरे । सहस्र वर्ष

बे-रा.

१२६

१७०

लौ ध्यान करतहौ रामकल सावकैरे ॥ १४९ ॥ तामे
राम समाधि करी अब सहस्र वर्ष लो वाम ॥ अति
आनंद मगन मेरो मन अंग अंग हरन काम ॥ १५० ॥
दाया करि मोको यह कहिये अमर होऊ जेहि भोति-
मोहि नारद मुनि तत्वे बतायो ताते जिय अकलंति
॥ १५१ ॥ तव सहदेव कृपा करिकै यह चरित कियो विस्ना

२ ॥ सो बहोद प्रमाण व्यास मुनि कियो वदन उचार
१५२ मुनि बालमीक क्रिया सातों ऋषि राम में फल
पायो । उलटो नाम जपत अच वीनो पुन उपदेश क
रायो १५३ राम चरित वरनन के कारण बालमीक
प्रवतार । तीनों लोक भये परिहरण राम चरित सु
खसार १५४ शत कोटी रामायण की नी तऊन लीनों

वे-रा-

१२७

१२

पार ॥ कस्यो वशिष्ठमिति रामचेद सो रामायण उच्चा
र १५५ काया भसंड गरुड सो भाष्यो रामचरित अव
तार । सकल वेद अरु शास्त्र कस्यो है रामचेद जस
सार १५६ कछु संते पसूर अव वरनत लखमति डर
वल वाल । यह रसना पावन के कारन सेंटन भव
जे जाल १५७ तीनो दूर संगलै प्रगटे प्ररुषो नम श्री

राम । संकरषण प्रचुम्न लक्ष्मिमा भवत महासुख

धाम १५८ शत्रुघ्नहि प्रनरुह कहीयत है चतुर व्यह

निज रूप । रामचंद्र प्रगटे जव गदह में हरषे कोसल

भूप १५९ अथ नक्षत्र नवमी ज परम दिन लगन

सुह सुभवार । प्रगट भये दशरथ गदह परन चतुर्थ

ह अवतार १६० अति फूलें दशरथ मनहौ मन कौ

वे-रा

१२८

१२८

सित्पा सखपायो । सौमित्रा कैकड मन आने दर सब
दिन सुन जायो ॥१॥ गुरु वशिष्ठ नारद मुनि जानी ज
न्म पत्रिका कीनी ॥ रामचंद्र विखात नाम यह स
र मुनि की सधि लीनी ॥२॥ देत दान नृपराज हि
जन को सब भी हेम प्रणार । सब खेद रि मिलि मे
गल गावन केवन कलश उगार ॥३॥ आये देव औ

१ सतिजन सबदे प्रसीस सावभायी । अपने अपनेथा
म चले सब परम मोद रुचिकारी १६४ मनबोखित
फल सबहिन पायो भयो सबत आनेद । बाल रूप कै
के दशरथ सत करत केल सखेद १६५ चुहरन चलत
कनक आगनमै कौसल्या खवि देखत ॥ नीलनलि
न तन पीत ऊगलिया चनदामिन उतिषेखत १६६

वे. रा. कवञ्जक माखन रोटी लेके बिल करत पुन मोगात ॥ स
१२५
१२९ खिचवत जननी समजावत आयकेठ पुन लागात ॥ १६०
कागभुसंड दशको आये पांच वर्ष लो देखे । स्तुति
करी आपवर पायो जन्म सफल करि लेखे ॥ १६१ क्रिया
करि निज थाम पढायो अपनो रूप दिखाय । वाके
आश्रम को उवसत है माया लगत न नाय ॥ १६२ ॥

प्रातःकाल उठ जननि जगावत उठो मेरे वारे राम ॥
उठि बैठे देत वनलै आई करी सखारी शाम १७० वा
शेभ्रात मिल करत कलेऊ मधुमेवा पकवान । जल
प्राप्त मन आरती करके फिर कीन्हो प्रसन्नान १७१
करत सेंगार चार भइया मिल शोभा वरनि न जाई ।
वित्र विवित्र सीस चौतनिया इद्रथ सकल विच्छाई १७२

बे-शा-

१३-

१३०

मलकावलि सक्तावलि रंछीयेर सुरंग विराजै ॥

मनजे सरसरी थार सर स्वती यमना मथ विराजै ॥

निलक भालपर परम मनोहर गोरोचन को दीनो ॥

मानो तीन लोक की शोभा अधिक उदय सो कीनो

१३४ खिजन नैन बीच लाशा पद राजत यह प्रबहार ॥

खिजन जग मनो लरत लराई कीर बजावत शर १३५

नाशाके वेसरमै सोती वरन विराजत चार ॥ मनो
जीव शानि अक्रणकहै बाफे रविके द्वार १०६ ऊँडल
ललित कपोल विराजत ऊलकत आभा गेड ॥ इंदी
वर पर मनो दीवियत रवि की किरन प्रवेड १०७ ॥
अरुणा अथर दसकत दसनावलि चारु चिबुक मस
क्यान । अति अनयाग सथाकर सोचत दाहिम बीज

वे. रा.

१३१

131

समान १०८ केह सिरी वित्त पदक विराजत वडमणि
मन्तासार । दहिनावर्त देत फवतावे सकल नाखत
वडवार १०९ रतन जडित केकत वाज्रवेद नगान सु
दिका सोहै । शरशर मन मदन विटपतरु विकच दे
ख मन मोहै ११० कटि किंकिणि रुनजन सुनितन
की हेस करन किलकारी ॥ नूपर धुनि परा लालि प

हैया उपमा कौन विचारी १८१ भूषन वसन आदिस
व रच रच माता लाउ लशैवे । रामचेइकी देव माथरी
दरपन देव दिखौवे १८२ निज प्रति चित विलोक म
करमै हेसत राम साव राम । नैसेई लक्ष्मन भरत श
बहन खिलत डोलत पास १८३ दशरथ राय न्हाय
भोजन को बैठे प्रपनेधाम । लावो वेगि राम लक्ष्म

वे.रा.

१३२

१३२

न को सति आये सावधाम ॥ वैदे सेवा बाबा के चा
रो भैया जेवन लागे ॥ दशरथ राय आष जेवेत है अ
ति आनंद अनुरागे । १८५ । लख लख शास राम साव
मेलत आष पिता साव मेलत । बाल के लिको विस
द परम साव साव समुद्र न पकेलत १८६ दाल
भात हत कछी रुखीनी अरु नाना पकवान ॥

आशेरान नरप चारिपुत्र मिलिअति आनेद निधान
१८७ अचवन कर पुन जल अच वायो जब नरप वीरा
लीनो । रामलक्षणा अरु भरत शत्रुहन सबनहिन
अचवनकीनो १८८ वीरा लाय चले खिलनको मि
लिकै चारो वीर । साखा सेरा सब मिले वरा वर आ
ये सरजू तीर १८९ तीर चलावन सिखा सिखावन

वे. रा. थर निसात देखावत ॥ कवडेक साधु असचढि
१३३
१३३
आपुन नाना भोति नचावत १५ कवडे चार भान
मिलि अगिया जात परम सावणावत । हरिन आ
दि वडजेतु किये बथ तिज सरलोक पदावत १५१
यहि विधि वत उपवन वड क्रीडा करी राम साव
दाई । बालमीक सनिकही कृपाकर कछु एक सर

जोगाई १५२ भई सोऊ जननी देखत है कहो गये चा
रो भाई । भूख लगी है है लालन को लावो वेग बुला
ई १५३ इतने सोऊ चार भइया मिल आये अपने थाम
साखुं बत आरती उतारत को सल्या अभिराम १५४
सौ मित्रा कै कई साखु पावत वडू विध लाउ लखवत
मधु सेवा पकवान मिटाई अपने हाथ जेवावत १५५

वे.रा.

१३४

१३५

चारो भ्रातन अमित जातिके जननी तव पोछाये ॥
कोपत चरण जननि अप अपनी कछुक मथुर सरगा
ये १५६ आई नींद गम सख पायो दिन को अम विस
रायो । जागे भोर दौरि जननी ने अपने के द लगायो
१५७ मिखा मित्र बडे सनि कहियत यज्ञ करत निज
थाम । मारि व और सबाहु महा सर विचन करत

दिन याम १५८ परेब्रह्म अवतार जानै के आये नृपके पा
स ॥ दशरथ राय बद्धत राजा विधि किये प्रसन्न हुआ
१५९ भोजन कर जबही ज विराजे तब भाष्यो मनि राय
यज्ञ सफल कीजै मेरो अवदीजै राम पदाय २० तब
नृप कस्यो राम है बालक मोको आजा कीजै ॥ तब
दिज कस्यो राम परमेश्वर वचन मान यह लीजै २१ ॥

वे.रा.

१३५

१३५

गुरुवसिष्ठ सब विध समजाये राम लखन संग दीने ।

मारगमें अहिन्त्या उद्योगे नावक निज पद छीने १-२

विद्यामित्र सिखाई वद्विधि विद्या यन्त्र प्रकार ॥

मारगमें ताउका जग्राई वदन पसार १-३ दिनमें राम

तरत सौ मारी नेक न लागी बार ॥ हीन्दी मुक्ति जानि

निज महिमा प्राये अरुषिके द्वार १-४ कीन्हे विप्रयत्न

परि श्रुत प्रसर विज्ञ को आये । अग्नितान करदह
न कियो है एक समद पढाये २५ जनक विदेह कि
योज स्वयंवर बड़ न्य विप्र बुलाये ॥ तोरन यन्त्र
देव शंकर की काहू जनन न पाये २६ विद्या मित्र सु
नि वेग बुलाये सकल सिष्य लै संग ॥ राम लक्ष्म
ण संग लिये आपने बले प्रेम रस रेखा २७ जहे नहे

वे.श.

१३६

१३६

उक्त ऊरोवा जोकत जनक नगर की नार । वित
वनि कृपायाम अब लोकत दीनों सखत प्रणार २८
कियो मनमात विदेह नृपतिने उपवन वासी कीनों-
देवन राम चले निज घर को सख सबहिन को दीनों
२९ सब घर देवि यन्मष पुन देख्यो देखे महल संगे
अद्भुत नगर विदेह विलोकत सख पायो सब प्रेमा ३०

कहत नारि सब जनक नगर की विधि से मोद पसा
र सीताजू को बरयह चहिये है जोरी सज्जमार २११
अपने थाम फिर तव दोऊ आये जान भई ककु सोऊ
कर डेडवत परसि पद ऋषि कै वैदे उपवन सोऊ २१२
संथा भई कृत्य नित कर कै कीनों ऋषि परनाम ॥
पौछे जाय चरन सेवा दिन करके प्रति विसराम २१३

बे-श- ब्रह्म सद्गुरु भयो सवेरो जागे दोऊ भाई ॥ कर परना
१३७
१३७
म देव गुरु हिजको जल सस्नान कराई २१४ प्राये
भूपदेश देशन के जरी सभा प्रति भारी । तहो बुला
ये सकल हिजनको जनक सभा में जारी २१५ कौ
शिक मनि तह छवि सौ पथारे लिये शिष्य संग सात-
वले नित्य आनंदिक सब कर हिज उर आने दन समात २६

होनों भात संग मैलीन्हें आये राज ड्यार ॥ जहे वैदे
सब भूप ओपसो वाछो गारभ अणार २१० अपने अप
ने भुजवल तोलत तोरत थनुष प्रार । ककु नहिच
लत विसाने भये सब रहे वड्डत पचिहार २१८ सीता
करत सहेलिन सो अनि यही करत खुनेद । तव उ
न कसो सकल सख सागर सोये परमानेद २१५ ॥

वे. रा.

१३८

138

बार बार जिय सोच करत है विधि सों वचन उचारी ॥
मन क्रम वचन यहै वर दीजो सो गत गोद पसारी २२-
एक बार सब देवी पूजत भयो दस सखि मोह ॥ ता
दिन तैं छिन कलन परत है सत्य कहत हो तोह २२-
सब न्यप पचे थनष नहि दूट्यो तव विदेह उत पायो ॥
क्रोध वचन करि सब सैं बोले क्षत्री की उन रहयो २२-

यह सनि लक्ष्मण भये कोथ अत विषम वचन यों बो
ले । सूरज वेश लपति भूतल पर जाके बल विन तोले
२३ कितक बात यह थनुष रुद्र को सकल विखकर
लै हों । आता पाय देव रख पतिकी कनक मोऊ रुद्र
गो हों २४ सबके मन को देखे अंदे से सीता आरत
जानी ॥ राम वेद तब ही अकलाने लीन्हों सारे ग पा

वे-रा-

१३५

131

नी ३५ छिनमें करले केज वढायो देवन है सब भूप-

डीव तोर अचात शह भयो जैसे काल को रूप ३६

सवही दिशा भई अति आनर परगाम सति पायो ॥

परस सम्हार सिष्य सेगलै के छिनही में तहे आयो

३७ जैजै कार भयो जगती पर जनक राज अति हरषे ।

सुखिमान सब कौनक भूले जै पुन समनत वाषे ३८

जनक राज नवविष पढाये वेरा वरात बुलाई ॥ द
शरथ राज वाजि यजलै कै सबही सौज तयाई ॥ २२५
खिलत चली वरात विपल यनलै कै जे मन्त्र नहि
पार । शोभा सिंध करत नहि आवै वरनन करत उवा
॥ २२६ ॥ गुरु वशिष्ठ मनि लगान दियो शुभ शुभ नह
त्र शुभवार । आये जान नरपति सनमाने कीही प्रति

बे.रा.

१४.

१५०

मनहार २३१ व्याह केल सख वरनन कीन्हो सतिवा
लमीक प्रणार । सो सख सूर कसो वह कीरत जगत
करी विस्तार २३२ वेद शास्त्र मय करी व्याह विध सो
ई कीन्हो नृपराय । राम लखन प्ररु भरत शत्रुहन
चार वेदिये विवाय २३३ होम हवन हिज पूजा गान
पति सूरज शक्र महेश । दीनों दान वज्रन विप्रन

३५

को राजा मिथिल नरेश २३५ खिलत यहि विथ ॥

उत सब भयो परम आनंदको वडत दाय जो दीनो ॥

भये विदा दशरथ न्यन्य सौ गवन अवध पर कोनो

२३५ भय पति आय जानि जब रघुपति मिले थाय

शिरनाय । दशरथ राय विनय वड कोनो जिय में

प्रति उरपाय २३६ खिलत यहि विथ हरि होरी हो ॥

वे-श-

१४८

१५१

नवमति कस्यो यन्वषको तोरेव रुद्र परम गुरु मेरे ॥

रामचंद्र शरण गुरुषोत्तम नेक नयन जब हैरे २३५

लीन्हो अंस विव भृगु पति को अपने रूप समायो ॥

कयो जायत पशैल महेन्द्र पै मति मति वर शिर नायो

२३८ अति आनंद अयोध्या आये कियो नगर सेंगार ।

कदली बिभ चौक मोतिन के बोधी वंदनवार २३९

कियो प्रवेश राज भवन नमैं राम वेद सखि राम ॥ अ
दभत भवन विराजत रतनन सुरज कीटि प्रकास ४
हादश वर्ष विराजै बालक फिर भूभार हरी । कैकेई
के वचन प्रमाण कियो नृपत बयह काज करी २४
वचन समुक्त नृप आज्ञा कीनो देव उपाय करो । राम
वेद पितृ आज्ञा मानी जिय मैं वचन थरो ॥ २४ ॥

वे. रा.

१४२

१५२

यह भूभाउ उतारन खणति वहुत अखिन सख देन.
वनीवास को चले सिया संग सख निधि राजिव नैन
२४४ मारग में हरि कृपा करी है परम भक्त एक जान
तहने गये ज चित्रकूट को जहो मनिन की खान ४४
वालमीक सनिवसत निरंतर राम सेव उचार । ता
को फल यह आज भयो मोहि दस दियो कुमार २४५

सूजाकरतपथराय भवन में रामवेद परनाम । कि
यो विविध विध सूजाकर के ऋषि चरनन शिरनाम
२४६ वज्रत दिवस लोवसे जगत गुरु विप्रकूट निज
थाम ॥ किये सनाथ वज्रत मनि कुलको वज्र वि
थ हर काम ॥ भरत जान नियमै स्वपति को डः
सह परम वियोग । आये साय संग सब लेके घर

वे. ग.

१४३

१४३

वासी रहत लोग २४८ तिन दशरथ सब चले तरत ही कौ
सल परके वासी । आये रामचंद्र माव देखो सब की मि
ही उदासी २४९ रामचंद्र प्रति सब जन देखे पितान दे
खन पाये ॥ एखी बात कसौ तव काहू मन बड़ विथ
विलखाये २५० वेदसीति करि रचुपति सब विधि म
रजादा अनुसार । बड़त भोति सब विथ समजाये भ

रत करी मनुहार २५१ गुरुवशिष्ट मनि कह्यो भरत सो
राम ब्रह्म अवतार । वनमें जाय वज्रत मनि नारे हर
कैरे भवभार २५२ पुननिज विषय रूप जो अपनो सो
हरि जाय देखायो ॥ आजा पाय चले निज घर को प्र
भरि गीत समजायो २५३ कछु दिन वसे ज चित्र
कूटमें रामचंद्र सहभात ॥ तहोते चले देउकावन

वे-रा-

१४४

१५५

को माव निधि सोवल गान्त २५४ मारग में वड्ड सति
जन तारे अरु विराथ रिष मारे । वेदन कर सरभेरा
महा सति अपने दोष निवारे २५५ दरशान दियो स
तक्षण गौतम पंचवटी परा थारे ॥ तहो उष्ट सूर्यन
खा नारी करि बिन नाक उथारे २५६ यहु सति अरु
र प्रवल दल प्राये छिन मराम सेचारे । कीन्हें काज

सकल सरसतिके भवके भार उतारे २५७ सति शरा
ल शशम जगये हरि वरु विथ राजा कीर्ती ॥ दिव्य
वसन दीने जब सतिने फिर यह आज्ञा दीन्ही २५८
दशकंथर को वेग सवारो हर करे भवभार ॥ लोणा
मदा दिव्य वस्त्र ले दीने जनक कुमार २५९ सूर्यन
खा जब जाय प्रकारे नाक कान ले हात ॥ रावन

वे-श-

१४५

१४५

कोय कियो अनिभारी अथर फरक अनिगान २६०

गयो मारीव आश्रम हित वही वानै वडु समजायो.

तब मारीव कस्यो दशकेथर विनती वडुत करायो

२६१ रामचंद्र अवतार कहत है सुनिनारद सुनिपास-

प्रगट भये निश्वर मारन को सुनि वह भयो उदास-

२६२ करगहि खडग तोर वध करि हो सुन मारिच

उर मायो ॥ रामचंद्र के हाथ मरुंगो परम पुरुष फ
ल जायो २६३ कण्ठ करेग रूप थरि आयो सीता
विनती कीन्ही ॥ रामचंद्र कर सायकलै के मारन
की विथ कीन्ही २६४ मारि चथन ववान लेना को
लक्ष्मन नाम पुकारि व । लक्ष्मन नाम सुनत
तहा आयो औ सर डष्ट विचारि व २६५ थरि के कण्ठ

वे.रा. १४६. १५६
भेष भित्तक को दशकेयर तहो आये । हरिलीने छिन
मै माया करि आपने रथ बैठाये २६६ बल्यो भाज गोमाय
जेत ज्यों लेके हरि को भाग । इतने राम चेद तहो आये
परम पुरुष वडु भाग २६७ जब माया सीता नहि देवी
जिय में भये उदास । एखन लगे राम डम गान सो वद
न वण्डी ड खरास २६८ मारगामें जटाश खरा देख्यो वि

कल भयो तन हीन । विनती करी समै ना सो वहुत
लगाई कीन २६५ जब तन तज्यौ गद्य रूपतिनव व
हुत करम विथकीनी २७० जायो सखाय दशरथ
को अपनी निजगति दीनी २७० मारगमें कसेथ रि
षु मोरेव हरपति काज सवारेव । पेण सरहरि
नरत पथारे जल को दोष निवारेव २७१ शिवरी परम

वे-श

१४७

१५७

भक्त रघुपति की वदत दिनन की दासी । ताके फल
आरोगे रघुपति हरन भक्त प्रकासी २७२ दीन मक्ति
निज पुर की नाको तब रघुपति चले आगे ॥ सीता
सीता विलपत डोलत परम विरह सौ पागे २७३ ॥
खिलत यहि विथ हरि होरी हो ॥ रविनेदन जब मिले
राम को प्रह भेटे हनुमान ॥ अपनी बात कही उन ह

दिसो वालि बड़ो बलवान २७५ समताल वेथन हवि
कीन्हो वाली दिनकमें तारो ॥ दीन्हो राज राम रवि
नेदन सब विथ काम सवाये २७५ समदीपके कपि
दल आये जरो सेन अति भारी । सीता की सथ लेन
चले कपि छूटत विपिन मज्जारी २७६ जल निथ
तीर गये सब कपि मिल सति सेपान कि वानी ॥

वे.श.

१४८

१५८

लेक वसत सीता रिपु वनमें सब वानर यह जानी २७७

रामचरण कर समिरन मनमें चले पवन सत थाय०

राम प्रताप विचन सब भेदे पैदे नगर सावणाय २७८

धरिलख रूप प्रवेश कियो कपि लेकानगर मजार०

राम भक्त निज जान विभीषन भेदे हरि प्रेकवार २७९

तव वाने सब भेद बनायो देवी कपि सब लेक । राम

चरण थरि हृदय स्रदित मन विचरत फिरत निशोक

२८ जाय प्रसोक वाटिका देखी दरशन सीता कीन्ह ॥

कर देउवत वझत विनती कराय स्रदिका दीन्ह २९

सब से देस कह्यो कपि सिय प्रति सनि हिय में थरि राख्यो-

राम से देस कह्यो तब सीता जो बूजो सो भाष्यो ३० ॥

लागी भूष चले उपवन में नाना विध फल खाये ॥

वे.रा.

१४९

१११

विदुष उखार उजार विपिनको सबस्तिनको दर साथे
१८३ सुनि प्रकार निशिवर वडु आये कूदिसवनि से
चारे ॥ रेद जीतवल निथ जव आयो ब्रह्म प्रसु उन
उरे १८४ तासौं वेथे दशानन देखन चले पवन स
त थीर ॥ रावन वडुत ज्ञान समजायौ कथ कथ क
था गोभीर ॥ चले छुडाय छिनक में तवही जारई

सब लेक ॥ कूदिवलै राज वनको जयकर ज्यो मरा
राजनि सेक २८६ आये तीर समुद्र मिले कपि मिले
आय जहे राम ॥ मरि मरि कथा अवन सीता की पु
लकित अति अभिराम २८७ करि कपि कटक चले
लेका की छिनमें बांधे सेत ॥ उत्तर गये पड़े चै
लेका पै विजय ध्वजा सेकेत २८८ पटये वालि कुमा

वे.श.

१५०

र विनय कर समजाये वदवार । चित नहि थरी काल
वस जायो फिर आये सकुमार २२५ असरत सरत उदा
र कल्पतरु रामचंद्रनथीर । विप्रभ्राता जायो जवि
भोषन निश्चर ऊटिल सरीर राख्यो सरत लेकेश कि
यो पुनि जव निश्चर सव मोरे । माया करी वदत नाना
विध सबको राम निवार २२६ केभकर पुन रेद जीत

यह महा बली बलसार । छिनमें लिये शेषमनि व
रज्यो लज्जी बली अपार २५२ कियो प्रसाद शान्तना कर
कै राज विभीषणादीनों । पुनि मेदोरि अचल आश दै
अभयदान सब कीनों २५३ समाधान सरगत को कर
कै अमृत मेघ वरषायो । कृपा दृष्टि अबलोक कर
कै हन कपि कटक जिआयो २५४ निश्रर किये सक

वे-श-

१५८

सब साथव ताते जिये न कोय ॥ निरभय कियो लेके
स विभीषण राम लखन नृप दोय २५५ सीता मिली
वदत सावपायो थो रूप निज मायो ॥ प्रष्टक या
न वैदके नीके चले भवन सावखायो २५६ चले पव
न सुत विप्र रूपथरि भरतहि दैन वथाई ॥ जानि
हूत रघुपति को प्रभरित भरत मिले नवथाई २५७

सुनत नगर सबहि न सख मातो जह नहे न ते चले था
ई ॥ रामचे द पुनि मिले भरत सो आनंद उरत समाई २८
कियो प्रवेश प्रयोथ्यामे तव चरचर वजत वथाई ॥ मे
गल कलश थराये द्वारे वेदत वार वेथाई २९ राजभ
वन मे राम पथारे गुरुवशिष्ट दरसायो ॥ श्रीस न
वाय वद्धत पूजाकर सुरज वेस वढायो ३० ॥

वे. रा. समाधान सब दिन को कीन्हों जो दरसन को आयो ॥

१५२

कौसल्या कैकई समिधा मिल मनमे साव पायो ३-१

वैदे राम राज सिंहासन जगमें फिरी उहाई ॥ निर्भय

राज राम को कहियत हरनर मनि साव पाई ३-२

चार मूर्ति थवि दरसन आये चार वेद निजरूप प्रस्त

ति करी बजत नाना विध सीजे कौशिल्य भूष ३-३

शिव विरेच नारद सनकादिक सब दशानको आये ।

राम राज वैदे जब जाने सब हिन मन सख पाये ३४

लोकपाल अतही मन हरषे सब समनन वरषाये ॥

पुष्प विमान वैद हरि आये लै ऊवेर पड़े चाये ३५ ॥

अति आनंद भयो अवनी पर राम राज सख दास ॥

कृतप्रगथर्म भये जेता में हरनरमा प्रकास ३६ ॥

बे-शा

१५३

असमेय वदयन किये अनि पूजै हिजन अपार ॥ हय
राज हेम येन पाटेवर दीन्है दान उदार ३० चरित अने
क किये रत्नायक अवधारी सावदीनों ॥ जनक
सता वदलाउ लखावत निपट निकट सावकीनों ८
जोन वसेत वदत डम फूलै जनक सता अनुरागे ॥
प्रेम प्रवाह प्रगट प्रगटायो होरी खिलन लागे ३०५

कवडं क निकट देख वरषा अटल फूलत खरीया ॥
हिंशोरे रमकत जमकत जनक सना संग हाव भाव
वित्त चोरे ३१० कवडं कमल सरोवर उपवन जनक स
ना संग लीने ॥ नानाजल विहार विहार है सतजन
न साखी दीने ३११ कवडं करनन महल चित्रसारी
सरद निशा उजियारी ॥ वैदे जनक सना संग वि

वे.श.

१५४

१५५

लसत मधुर केलि मनहारी ३१२ कवड्डेक प्रगार भूषना
ना विथ लिय सरोथ सावकारी ॥ कवड्डेक निरतत दे
व नदी लावि रीकत है सावभारी ३१३ राम विहार क
ह्यो नाना विथ बालमीक सनिगायो ॥ वरनत चरि
त विस्तार कोटि सतत ऊपर नहि पायो ३१४ स्वर सम
इकी बंद भई यह कवि वरनन कहा करि है ॥ कहत

चरित रचनाय सरस्वती वैरीमत अनुरिहै ३१५ अथ
ने थाम पदाय दिये तव परवासी सब लोग ॥ जैजैजै
श्रीराम कल्यातरु प्रगट अयोध्या भोग ३१६ उष्टपति
जव वैदे भवपर थारि भूष पतिकी रूप ॥ छिनमै भव
को भार उतारेव परसराम दिज भूष ३१७ व्यास रूप
कै वेद विस्तारे कीन्ह प्रगट प्रान ॥ नाना वाक्य धर्म

वे.श.

१५४

१५५

शापन को तिमिर हरत भव भावन ३१८ बुद्ध रूप क
लि धर्म प्रकाशो दया सबन की मूल ॥ हर कियो पा
खंड वादहारि भगवत को अनुकूल ३१९ कलिके आ
दि श्रेष्ठ कृत प्रगके है कल की अवतार ॥ मारि मले
न धर्म फिर बाण्यो भयो जग जय जय कार ३२० कर्म
वाद शापन को प्रगटे शक्ति गर्भ अवतार ॥ सुधापान

दीन्हों सरगनको भयो जग यश विस्तार ३२२ असुर
नको व्यामोह कियो हरिथरो मोहनीरूप ॥ अमृत
पान कराये सरनको कीन्हे चरित अन्त ३२२ तैसैंही
भव भार उतारन हरि हलधर अवतार । कालिंदी आ
कर्ष कियो हरि मारि दैत्य अपार ३२३ गज प्रहाराह
ले जल भीतर तव हरि समिरन कीन्हों ॥ छोउ गुरु

वे-रा-

१५६

१५६

उ सावित्रास सोवरो भक्तन को साव दीन्हो ३२४ जब

वज्र असुर वडे शिवीपर कियो अनर्थ विस्तार ॥

सत्यसेन प्रगटे विसेभर सत्य कियो है अपार ३२५ ॥

निज वैकुण्ठ वसायरमापति कियो रमा कोहेत ॥

विनती सनि कमला की केशव कीन्हो साव सेकेत

३२६ ब्रह्मचर्य पापन के कारणाथरो विश्व प्रवतार ॥

जहे तहे सनिवर निज मरियादा यापी अचट अणार
३२० अजित रूप है शैल यरो हरि जल निध मणवे का
ज ॥ सर अरु असर चक्रित भये देवत किये भक्त के
काज ३२८ जव बलि राजा गये देव घर लीन्हों स्वर्ग कु
अय ॥ अदिनी उचित भई कश्यप सो विनती करी
सुनाय ३२५ तव कश्यप सनि कश्यो पयो व्रत विधि सो

वे-श-

१५७

157

करो वनाय । ताकी कृत्व जन्म हरि लीन्हें श्रीवाम
न सखदाय ३३- भादों अवण द्वादशी शुभ दिन थ
रो विप्र हरि रूप ॥ शिव विदेवि मनकादिक आये
वन्दनको सखभूष ३३- यज्ञउपवीत विथोक्त कि
यो विधि सब सर भित्ता दीनी ॥ वामन रूपवले
हरि द्विज वरवल्लिको मन सख कीनी ३३- देउ क

मेउल हाथ विराजत और ओरे मगाला ॥ थरि
वदरूप चले वामनज् श्रेष्ठ नैन विशाला ३३३
सूरज कोटि प्रकाश श्रेष्ठ कटिमें खला विराजै ॥
करी वेद प्रतिन्य होरै मनहु महावन गाजै ३३४
मनि थाये तवहौ बलि राजा आय चरण शिर नायो-
विनती करी वहुत सख मायो आज भयो मन भायो ३५

वे. रा.

१५८

५८

चलिये विप्र यज्ञ शालामें जहों दिजवरसव राजै । आ
ये ब्रह्म सभामें वामन सूरज तेज विराजै ३३६ तव न
पकस्यो कच्छु दिज मोगो रतन भूमि मणि दान ॥ इ
य राज हेम रतन पाटम्बर देखौ प्रगट प्रमान ३३७ ॥
तव बोले वामन यह बानी सुन प्रह्लाद कुल भूष ॥
वज्रत प्रति ग्रह लेत विप्र जो जाय परत भव रूप ३३८

तीन पैर वसथा हम पाँव परन ऊरी एक कारन ॥
जब नृप भव सेकल्य कियो है लागे देह पसारन ३३
एक पैर मैं वसथानापो एक पैर सरलोक ॥ एक पै
उरी जै बलि राजा तब है हो वितशोक ३४ नापो देह
हमारी हिजवर से सेकल्यत कीन्हो ॥ सन प्रसन्न
वासन यों बोले तेमो के वसकीन्हो ३५ सदा हार

वे-रा-

१५४

१५९

तेरे हाथो है दर्शन देहों तोहि ॥ माया काल कबड़े
नहि व्यापै समिरन करतै मोहि ३४२ सतल लोकमै
थिरकर थाप्यो जहै विभूति प्रति भारी । गहिकै रा
दा हारपर हाथे वामन ब्रह्म मगरी ३४३ स्वर्ग लो
क सीन्हों सरपति को प्रति थिर कर कर थाप्यो । नि
गमनेति कहि रतत निरतर देव शत्रु सब कोप्यो ३४४

वामन रूप ब्रह्महरी प्रगटे जिनको यश जगयावे ॥
शेष सहस्र सख रत्न निरंतर सूर पार किम पावे ३४५
पुन वलिगजहि स्वर्ग लोकमें पाँपेरो हरिदाय । सार्व
भौम अवतार धरेंगे श्रीवामन सखदाय ३४६ पुनि
विभू रूप एक ही लेंगे सकल जगत कल्याण । कप
ट खंड पाखंड असुर को पापे भक्त निदान ३४७ ॥

वे-श-

१६०

160

विषक सेन रूप हरि लेंगे कीन्हो शिव को हेत ॥ अस
र मार सब तरत विजारे दीन्हें रुद्र निकेत ३४८ धर्म से
त है धर्म वढायो भविको धारन कीनों ॥ शेष रूप है
यरा सीस फिर सब जग को सख दीनों ३४९ अंतर
यासी पासन कारणा निज स्वधर्म धरि रूप ॥ अन्त
दान दे सब जग पोष्यो किये काज हरभूप ३५० ॥

योग पेश पातं जल भाषो सोउ छीन जब जायौ । यो
गेश्वर वष थारि हरि प्रगटे योग समाध प्रसायौ ३५१ ॥
क्रिया पेश कृतिने जो भाषो सो सब प्रसर मिटायौ ॥
ब्रह्म भान है कै हरि प्रगटे छिनमै फिर प्रगटायौ ५२
यह प्रनेक प्रवतार कसके को करि सकै वातान ॥
सोई सूरदास ने बरने जो कहै व्यास प्रान्त ॥ ३५३ ॥

वे-रा-

१६१

161

ऐस कला अवतार श्यामके कविपै कहत न आवै-
जहे जहे भीर परत भक्तन को तहे तहे वष थरिथावे
३५४ माया कला ईश चतुरानन चतुर्व्यूह थरिहू-
वा प्रवरुणा प्ररु यमकवेर शशि मन्त्र प्ररित सर
भूय ३५५ रवि शशि मन्त्र मरीच सर प्ररु प्ररु चार
वेद वष जात । जग कौ प्रगट करन परजापति प्र

गरे कला निधान ३५६ जो जो भूप भये भव मंडल
लोक पाल निज जान ॥ निज महिमा हरि प्रगट क
री है विधि के वचन प्रमान ३५७ सर प्ररु प्रसर रवी
हरि रचना सो जग प्रगट सब कीन्ही ॥ कीडा करे
वज्रत नाना विधि निगम वात टढचीन्ही ३५८ य
हि विधि होरी खिलत वज्रत भोति खल पायो ॥ थरि

वे.रा. अवतार जगतमै नाना भक्तन चरित दिखायो ३५५
१६२
१६२
प्रेम कला अवतार वद्धत विधि राम कृष्ण अवतारी
सदा विहार करत हजमेडल नन्दसदन सावकारी
३६ नित्य अखंड अन्तर्प अनायाति अवगत अनन्त
अनेत ॥ जाको आदि कोऊ नहि जानत कोऊन पा
वत अंत ३६ जब हरि लीला की सधि कोन्ही प्रगट

करन विस्तार । श्रीवृषभान रूपहै प्रगटे प्रति वृज
राज उदार ३६२ विद्या ब्रह्मकही यसमति सौजा
की रूप उदार । सोरह कला वेदज्यों प्रगटे दीनों ति
मिर विदार ३६३ पुन वसुदेव देवकी कहियत परि
ले हरि वर पायो ॥ पूरण भाग्य आय हरि प्रगटे यउ
कुल नापन सायो ३६४ आदेवह रोहनी आई शाख

वे.ग.

१६३

163

चक्र वषथारो । ऊंडल लसत किरीट महाधनि वष

वसुदेव निहारो । प्रसन्नतिकरी वज्रत नाता विथ

रूप वत्सर भज देव्यो । पीतोंबर अरु श्याम जलद

वष निराव सफल दिन लेव्यो ३६६ तव हरि कस्यो

जन्म तमहरे गरु तीन बार हम लीन्हो ॥ एम्मीगर्भ

देव ब्राह्मण को कसरूप रेग भीन्हो ३६७ मागो सक

ल मनोरथ अपने मन बोद्धित फल पायौ ॥ शोख

वक्र गदा पद्म चतुर्भुज अजन जन्म लै आयौ ३६८

यह भव भार उतारन कारन हलधर को संग लायौ ॥

क्रीडा करो लोक पावन कर करो भक्त मन भायौ ३६९

प्राकृत रूप धरो हरि छिनमें शिशु है रोवन लागे ।

तव वसुदेव देवकी निरावन परम प्रेम रस पायो ३७०

वे-श

१६४

१६४

तव देवकी दीन है भाषो तपको नाहि पताजै । असे
वसुदेव जाव लै गोकुल कस्यो हमारे कीजै ॥ ३२॥
तव लै हरि पलना पोछाये पीनो वरज ओछाये । त
व वसुदेव शोस थरि पलना भयो सवन मन भायो ॥
गोकुल चले प्रेम आनर है बुलगाये कपट कपाट ।
सोये खान पहरु अरु सोये सवे सुक भई वोट ॥ ३३ ॥

नव वसुदेव लियो कर पलना अष्टने शीश चढायो ।
रेत अयेरो कछु नहि सूजन अटकर अटकर आयो ५४
शेष सहस्र फन ऊपर छाये चतकी वेद वचावै । आगे
सिंह झंकारत आवत निरभे वाट जनावै ५५ जस
ना प्रति जल हर वहत है चरण कमल परसायो ॥
मारग दीन्ही रामसिंघ ज्यों नन्द भवन चलि आयो ५६

बे. ग.

१६५

पड़ेचे आय महर मेदिर मेनेकन सेकाकीनी । बाल
क थरिलैके सरदेवी सरत गवनकी कीनी ॥ ३५३ ॥
लैवसदेव तरत चर आये काहु जिय नहिजाते । जब
वह रोवन लागी तव सब जागपरे अकुलाने ॥ बाल
कभयो कस्यो नपसौ जब दौरिकेस तव आयो । कर
गह खडग कस्यो देवकि सौ बालक कहे पड़चायो ॥

तव देवकी प्रथीन कस्यो यह में नहिं बालक जायो ॥

यह कन्या मोहि वकस वीर तूकी जे सो मन भायो ७६

कंस वंस को नास करत है कस समुझ दिस आयो ॥

मोको भई प्रताह दवनी ताते डर नहि जानी ३७७ क

मा मो गलई तव राजा नेक शोक नहि आनी ॥ पट

कत शिला गई आकासे कंस प्रतीत नमानी ३७८।

वे-श-

१६६

166

भई आकाशवानी सरदेवी केस यहो अव आई । तेरो
शत्रु प्रगटे वज्र वज्रमै काज लाव्यो नहि जाई ७५ ॥

जैसे मीन करत कल मीठा जलमै रहत समाई । त्यो

तव काल प्रगट एक कहत रहे लषण सकत तेहि

कोई । ३६ अंतर ध्यान भई सरदेवी केस प्रतीत जो

माती । तव वस देव देवकी के रह केस गयो यह

जानी ३८२ तम अपराध देहकी मेरो लावो न मेखो
जाई । मैं अपराध कियो सिअ मारे कर जोरे विल काई ।
३८२ पुन गृह आय सेज पर सोयो नेऊ नीद नहि आवै ।
देश देश के हत बुलायो सब हिन सतो सुनावै ॥ ३८३
दीन हीन जो असुर चढत बलि करत सकल पुनि ते
सो । बूझत नहि तन भार उतारेव जल को मोखन जैसो

वे.रा.

१६७

167

भयो भोर यशुमति गृह आनेद मंगल चार वधार्ई ॥ जा
गी महर् प्रउमख देखो आनेद उर न समार्ई ३८५ जैसे
शाशि प्रगटन शची दिशि सकल कला भरि पूर । यस
मति कृप आय हरि प्रगटे प्रसर निमिर कर हर ३८६
नेदराय चर छोटा जायो महर् महा खल पायो ॥ वि
प्रबलाय वेद धुनि कीनी खस्ती वचन पढायो ३८७ ॥

रागिनी बंगाली नाल ३ ॥ राजलशेर ॥ एकहिरस
हवाको छोड़ मिया मत देस विदेस फिरे मारा ॥ क
जाक अजल्का लटै है दिन रात बजा कर नकारा ॥ क्या
भैसा बधिया बेल अतर क्या गाने पला सिर भारा ॥
क्या रोहे चावल मोह मटर क्या आराध आका अंगारा-
सब टाट पड़ा रह जावेगा जब लाट चलेगा वन जारा ॥

वे.श.

१६८

१६८

गहै तलक खीवन जाय और खिप भी तेरी भारी है ॥
प्रयगाफिल तऊ से भी चढ़ता एक और वश व्योषा
री है ॥ क्या शकर मिसरी कंद गिरी क्या सासर मी
दा खारी है ॥ क्या दाव मुक्का सौट मिरच क्या केस
र लौंग स्यारी है २ तू बथिया ला देवें लभरे जो
सख पछिम जावेगा ॥ यासूद बढा कर लावे

गाया चाटा वाधा पावेगा । बटमार अजल्का रहे मैं
जब भाला मार गिरावेगा । धन दौलत नाती तोता
क्या एक भनगा पास न जावेगा ॥ ३ ॥ हर मैजिल
में अत साय तेरे यह जितना डेरा डरा है ॥ जरदम
दिरम का भंडा है बेहक सिपर और खोरा है ॥ जब
नाइक तनका निकल गया जो मलकों राश है ॥

वे.श.

१६४

169

फिर दोआहै में भंडाहैने हलवाहैने मोआहै ४ ॥

जब चलते चलते रस्तेमें यह गोन तेरी फल जावे

गी ॥ एक बथीया तेरी महीपर फिर चरने वास

न आवेगी ॥ यह बिपजो तने लादीहै सबहि स

सोमें बढ जावेगी ॥ थीहूत जवाई वेदा क्या बनजा

रा पास न आवेगी ॥ ५ ॥ कौनाहक बोज उ

हा नाहै इन गोनौ भारी भारीके । जब काल लखे
आन पश फिर हनहै व्योपारीके । क्या साज जशऊ ज
र जेवर क्या मोटे धान की नारीके । क्या छोड़े जीन स
न हरीके क्या हाथी लाला अमारीके ६ जो बिष भरे
तु जानाहै यह बिष मिया मत जान अपनी । अब को
इ चरी पल सायत मै यह बिष बदन कीहै बिपनी ॥

तखते शाल उशालोंके ॥ ८ ॥ ऊँच काम न आवे
गा तेरे यह लाल जमईद सीमो जर ॥ सब पूजी वा
टमैं विखरेगी जब आन वनेगी जोऊर ॥ क्या मसने
द तकिण मलक मकान क्या चौकी ऊरसी तखत छ
तर ॥ क्या मालख जाना मलक मकान दौलत
हशमत फौज लशकर ॥ ९ ॥ यह धूम थडका सा

वे. रा.

१७१

श लिये क्यों फिरता है जंगल जंगल । एक भूमगा

पासन आवेगा मौकफ द्रुया जब अन्न और जल ॥

वर बार प्रदारी बौपाए क्या खासा तनसख क्या म

ल मल ॥ क्या विल वनत कीये रेशम के क्या ला

ल पलेगा का रंग महल ॥ १० ॥ क्या प्रखत म

कान वनता है है विभ तेरे तन का पोला । ते ऊंची

गण्डी उदाता है यही गोरगण्डने मर खोला ॥ कपारे
नी खन्द करन्द वही का कोट जंगरा प्रममोला ॥
क्या बर्जरे हला तोप किला काशी शादरु रौर गो
ला ॥ ११ ॥ अब काल फिरा कर चावक को यह वै
ल वदन काहं केगा ॥ कोई नाज समेटेगा तेरा
कोई गान सिंघे और टोकेगा ॥ हो छेर अकेला जंग

वे.श.

१७२

लमें त्वाक कल हदकी फाकेगा ॥ उस जेगलमें

जब आहनजीर एक भनगा आनन जोकेगा ॥ १२ ॥

यह पेंह अजावहै इतियोकी और क्या क्या जिनस उ

कटीहै ॥ यसे मालकीसी कामीदाहै और चीज कि

सिकी त्वहीहै ॥ ऊछ पकताहै ऊछ बनताहै प

क वान सिदाई पहीहै ॥ जब देखा खवतो आवि

रको नेलहा भाउन भही है ॥ गल शोर ववूला आगार
वा और कीचड पानी मही है ॥ हम देख चुके इस ड
नियों को सब थोखे कीय सीही है ॥ कोई ताज खदीरे
हंस हंस कर कोई तखतणा जवन खाता है ॥ कोई क
पड़े रंगो पहनो है कोई गुदरी ओढे जाता है ॥ कोई
भाई बाप चाचा मामा कोई माती हत करहा ता है ॥

बे-शा

१७३

जब देखा खूब तो आखिर को मे रिहता है ने नाता है
१७३ यत्न शोर । कोई सेह मरा जन लाख पनी जेव जाज
कोई पम सारी है ॥ यहा बाजा किसी का हल का है
और विप किसी की भारी है ॥ क्या जाने कोन खरी
दे है और किसने जिनस उतारी है ॥ जब देखा
खूब तो आखिर को दलाल न कोई व्यापारी है १४

कोई फल के बैठे मसनेद पर कोई रोवे अपनी दौलत
को ॥ कोई बोले अपना मुँह से लो और मेरा हेसा मुँह
को दो ॥ कोई लड़ता है कोई मरता है जगडे हक और
नाहक को ॥ जब देख खेत तो आस्थिर को कबुले
ना एक न देना दो ॥ रम्मल नजूमी आ मिल है
और फाजिल मुला स्याना हो ॥ कोई आमिल कामि

वे. रा.

१३४

लदाना कोई मस्त सिद्धा दीवाना है ॥ ताबीज फनीला
फालफले और जाड मेतर लाना है । जब देखा हू
बनो आखिर को सब हीला मकर वराना है १६ । को
ई लोटे कूचे गलियों में तैयार किसी का चेरा है ।
नित कजीये ऊगाडे रहै है यह मेरा है यह तेरा है ॥
जब देखा हू बनो आखिर को न मेरा है ॥ १७ ॥

कोई दोषी दोष बनाता है कोई बोधा फिर प्रमा मा है ॥

कोई साफ बरहना फिरता है ने पगड़ी न पाजा मा है ॥

कम खास राजी और गाछे का नित कजीया है ॥ जब

देखा हवतो आखिर कोने पगड़ी है ने जा मा है १८

कोई बाल बछाए फिरता है कोई सिर को चोट मझा

ता है । जब देखा हवतो आखिर को सब छोड प्रकेला

बे-श-

१७५

जाना है । १५ । कोई रोता है कोई हसता है कोई नाचे
है कोई गाना है । कोई छीने ऊपटेले भागे कोई थोस
डर दिख लाता है । कोई माल इकटा करता है कोई
ऊँजी ऊलफ लगाता है । जब देखा खूब तो आखिर सब
ऊगाड़ा रला जाता है २० । कोई वेवे भेगा सगाव अफ सू
म कही हथ दही की फेरी है ॥ कोई पला सिर पर

लाता है कोई लादे वै लम केरी है । कोई ऊगडे अपनी
जागर पर यह मेरी है यह तेरी है ॥ जब देखा खिलती
आखिर कोन तेरी है न मेरी है न तेरी है ॥ कही वली
देकी एनी है कही खासी करवकी पुली है ॥ कही
वलनी ब्राज पिटारी है कहि बलरा वकी वली है ।
तरकारी वैगन सागरा गुड गाअ गाजर मूली है ॥

वे.श.

१७६

११६

जब देखा हवतो आखिरको सब विकरी देखत भू
लीहै २२ कही वान घटेरन टाट पगजी कही दमर
ख वमरावन कलाहै ॥ कही शेक रुपयेका खरदा
कही कौडी पैसा थेलाहै ॥ कही छटना खाज पि
टारीहै कही विकना खाट खोले लाहै ॥ जब देखा
हवतो आखिरकोने पीसी खाट न चखाहै ॥ २३॥

कोई शिकरा वाज उदाता है कोई हाथ में राव के ततली
है ॥ शरवाज कोई लै वैदा है और दोउ किसी ने उलती
है ॥ हैतार किसी के हाथों में और नाचती फिरत घुन
ली है ॥ जब देखा खूबनो आखिर को नरे शमस त
न सतली है ॥ अब किस्का रेरा बुरा कहिये और
किस्का रूप भला कहिये । एक दम की पैट लगी

वे.ग.

१७५

है यह प्रखोहम जा चरवा कहिये ॥ ये सैरत माशदे
नखजीर अवजा कहिये रेजा कहिये । कछु वात
नहीवन आनेकी बुप चाप भला है क्या कहिये । य
लशोर बहूला आगहवा औरकी चडु पानी मही है ॥
हम देख चुके इस उतियो को सब थोखि की मही है २५
वटमार अजल्का आपड़ेवा टक इसको देख दरो वावा

अवशकवह्य ओ आखोंसे और आँहें सरदभरो वावा ॥

दिल हाथ उठा कर जीने सेवे वस मन मार मरो वावा ॥

जव बाणकी खातिर रोते थे अव अपनी खातिर रो वा

वा ॥ तन सखा ऊवरी पीट ऊई चोरे पर जीत थरो वा

वा २६ जव जीनेको तम रुख सत दो और मरने को

मह मान करो ॥ विगत करो इह सान करो या पुत्र

बे-श

१५८

११८

करो या दान करो ॥ या श्री लड़वटवा श्रेया खा
सा हलवा नान करो ॥ ऊँछ लतफ नही अब जी
नेमें अब चलने का सामान करो ॥ १५ ॥ तन
रूपा ॥ दिल काटो अपना जीनेसे अब और गले को
मत काटो ॥ अब चाट रूना की टुक चवाखो और
हिन किसी का मत चाटो ॥ धन छोडो हिसे व

खीरकी औरभाजी अपनी तम छोदो ॥ नाकेद वन्देरे
कूद बुके अव और उलनी मत छोदो २८ यह असव
इत कूद उछला अव कोश मारो जेर करो ॥ अव मा
ल शकटा करतेथे अव तनका अपने फेर करो ॥ रा
फ हूदा लशकर भाग बुका अव ज्ञानमें तम शम शे
र करो ॥ तम सोऊ लशई शर बुके अव भागनेमें म

वे-रा-

१०५

न देख करो ॥ २५ ॥ सिर कोण चोटी वालइ एमह
पीला पलकै आन कुकी ॥ कट टेजा कान इए वह
रे और ओवे भीवु थलाय गई ॥ सखनी दगई और भू
ख चटी दिल ससइआ आवा जनही ॥ जो होनी थी
सो हो गुजरी अब चलनेमै कुछ देख नही ३० ॥ इस
पाव विसट कर चलनेसे मत रस्ते को हैरान करो ॥

और पोपले सहसे रोटी को मत मल मल कर हल का
न करो ॥ अब आपद्म तम पानी से मत पानी का न
कसान करो ॥ कुछ लाभ नहीं इस जीने में अब मरने
से परहान करो ॥ ३१ ॥ जयनाल ॥ ज्ञान मथ
माने सोनर के ये जिनको रहत हैं निरु दिन खमा
री ॥ ज्ञान मथ पीवत भेदै खमारी सरत अंतर वि

वे.श.

१८.

80

ले लगी रहतारी ॥ अने दरत मेरो सदा निसवा सर
नरक खरी भाग गये एक वारी ॥ कहत कवीर स
नो भाई सादो शरु कीनो प्रीत मोहे हरहे सै प्यारी ३२
कवित ॥ ताल ॥ शूलफाक ॥ पहरे आई नव स
त अवरन अतही सेदर लया बहोत सियानी ॥ गो
रे वदन पर अलको छूटी मानो चेदन ले पटानी ॥

मरगसे नैना को किल वैना कटके हरगजवाल सह्य
नी ॥ शाहे बहा इर ये खव निराखत रेडलोककी अप
सर विसयनी ॥ ३३ ॥ द्याल नाल ३ ॥ खडगल
बोह प्यारे भोरभे अडना ॥ दीप वाकी जोत चटी चे
दंडेका चोदना ॥ मोतनके हार सीतल फुरि आयो
अजना ॥ ३४ ॥ द्याल नाल ३ ॥ साडे नाल वो

वे.श.

१८१

लीवे आमीवे रेऊटे आवापेगासि आलोदी ओगालि
आ ॥ ह्य हिडि मोडे कारी कमरीया वाप असाडे दे
या पालिआ ॥ ३५ ॥ द्याल ताल ३ ॥ मीयो राजावे
सोणा नित साडे आडोदा ॥ माउही गल मनदा नहि
आपना आपजनामदा ॥ कोई समकाओ कौ पेक्षप
मावद दिखलामदा ॥ ३६ ॥ द्याल । ताल ३ ॥

पे गल मै नू ते दसीवे मीयो सोणेदे आमनदी उगाही
जिउअ देदा ॥ मैचेदन तेरा अजव पहरावा केनी वे
दे गल हसिवे मीआदा ॥ ३७ **ह्याल नाल १ महत**
लागी दे मीयो मैरी तेडे नाल तसी जाणादे नाही खो
न योवन प्यारा विरजग जीवे ईशक तसाडे नपढ
मी ॥ ३८ ॥ **इति शौरगजल ॥ ॥**

वे.रा.

१८२

१८२

१८२
२२
१५०

मिच्छति स्या सेवाय विवायरे । अस्या केत दले
ऊरु क्षण मिह भूते प लक्ष्मी लव क्रीते दास श्वो
प सेवित पदो भोजे ऊतः सेधुमः ॥ सा स साधस
साने द गो विदे लोल लोचना सिंजान मेज्ज मेजीरे
प्रविवेश निवेशने ॥ अति क्रम्या पोगे अवणा
पथ पर्यंत गमन प्रवासे नैवाक्षणे स्तरल तरता

रा.म.
गी

रम्पतिनयोः । तदा नी राथायाः प्रियतम समा लोक
समये पपात सेदं व प्रसर यिव हर्षाकृतिकरः
७३ भजेत्यास्तुत्याते कृत कपट कगाइति विहितः
मितेयाते गेहाहिरिव हिताली परिजने । प्रियाये
पश्येत्याः स्मर शर समा कृत सभगे सलजाया ल
जावगम दिव हरे मगादशः ७४ ॥ अष्टपदी ॥

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकारवि
भेदो । जलनिधि मिव विधु मेडल दर्शन तरलित ते
गात्रेणो ॥ हरि मेकर सेचिर मभिलषित विलासे ।
सादृशी शुक हर्ष वशे वद वदन मनेग विकासे । हा
रममल तरतार मरसि दयते परिलेख विहरे । स्फ
टतर फेन कदेव करेवित मित यमना जल हरे ॥ २ ॥

रा.म.
गी.

श्यामल मण्डल कलेवर मेण्डल मधिरात गौर डकुले
नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भरवल यितम्
ले ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन जनित र
तिरागे । स्फट कमलोदर खिलित खेजन प्रगामिव
शरदित डगे ४ वदन कमल परिशीलन मिलित
मिहिर सम ऊडल शोभे । स्मित रुचि ऊसम सम

लसिताथर पलव कृत रति लोभम् ५ शशिकिर
ण क्षुरितोदरजलथर संदर सज्जसम केशे तिमिरो
दित विप्र मेडल निर्मल मलयज तिलक निवेशे ६
विपल पुलक भरदेतारिते रति केलि कला भिरथीरे
मणि गण किरण समर समञ्जल भूषण सभगा
शरीरे ७ श्रीजयदेव भणित विभव दिशणी कृत

श-म-
मी-

भूषणभारे । प्रणमत हृदि विनिधाय ह्रीं सचिरे स
कृतो दय सारे द ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खी हृदे मेदत्र पाभर निर्भर स्मर पर वशाकृतस्फी त
स्मितस्त्रापिता ययाम् । सरस मलसे दृष्टा दृष्टा मुक्त
नैव पलव प्रसर शयने नितिसाक्षी सवाच हृदिः
प्रियो ॥ किशलय शयने तले ऊरु कामिति चरण

कमल विनिवेशे । तवपद पल्लव वैर परा भव सिद्ध
मन भवतु सर्वेशे १ नृणा मधुना नारायणा मन्त्रा
त मनसराधिके । ॐ । करकमलेन करोति चरण
महासागमितासि विहरे । नृणा स्वप ऊरु शयनो
परमासिव नृपुत्र मनगतिहरे २ वदन स्यानिधि
शालित समस्त मितरचय वचन मन क्लृप्ते । विरह

रा-म-
गी

मिवापन यामि पयोधरोयक मरसिडकल ॥३॥
प्रियपरिरेभणा रभसवलित मिवपुलकित मतिड
रवापम् । मधुरसिज्जवकलशे विनिवेशय शोषय
मनसिज तापम् ४ अथर सथारस मपनयभासि
निजीवयस्त मिव दासम् । त्वयि विनिहित मनसे
विरहानल दग्धवप्रमविलासम् ५ शशिसुखि

मखरय मणि रशना गुण मन्त्र गुण के द ति ना द म
श्रुति प्रगुले पिकरुत मम शमय विरादव सादे ६
मासति विफल रुषा विफली कृत मव लोकिन म
थनेदे । मीलति लजित मिवनयने तव विरमवि
हजरति खेदम् ७ श्रीजयदेव केवेरिद मनुपदति
गदिन मथरिष मोदम् । जनयत रसिक जनेषु म

ग.म.
गो.

नोरमरतिरसभावविनोदम। द॥ अष्टपदी॥ श्लो
क॥ प्रहृष्टः पुलको करेणानिविडास्तेष्वेति मेवेण
वक्रोडाकृतविलोकितेयरसथापानेकथानर्म
भिः आनेदाभिगमनेमन्मथकलापुद्गेपि यस्मिन्
भू उद्भूतः सतयोर्वभूव सरता रेभः प्रियेभावकः
७६ मीलहृदिमिलत्कपोलपलके सीत्कारथागव

शादव्यक्ता कलकेलिकाक विक सहेता अथौ नाथ
रे ससोत्काम्य पयोथरे भशपरिष्वेगात् करंगोटशो
हर्षोत्कर्ष विमक्त निःसहज नोर्थन्यो ययत्पानने ॐ
दोर्भा संयमितः पयोथर भरेणा पीडितः पाणिजै
एविहोदशनैः क्षताथरषदः श्रोणी तटे नाहतः ह
स्तेनानमितः कचेथर मधुसूदन संमोहितः को

श.म.
गी

तः कामपि तन्मि मापतदहो कामस्य वामागतिः ५८
वामो के रतिकेति सेकसरणा रंभातया साहस प्राये
कांतजयाय किंचिदपि शोभियत्संभ्रमोति सदाज।
वनस्थली शिथिलितो दोर्वलि रुक्मिणि वत्सोत्सी
लिते मति पौरुषरसः स्त्रीणां कृतः सिध्यति ५९। त
स्याः पादलपाणि जांकितसरो निद्रा कषाये दृशौ

सनिर्दूतो यशोणिमा विललिता ससुखजो मर्दजाः
कोवीदामदरम्लशोचलमिति शानन्निवातैरुशारेभिः
कासशरैस्तदद्भुतमभूत्तस्मिन्ः कोलितम् ८० अथ
कोतेरति श्रान्तमपि मेरुते वीक्षयानिजगाद निगवा
थायथा स्वाथीनभर्त्तका ८१ इति मनसा निगदेते
सुरतोते सातितात विज्रोगीयथा जगाद सादर मि

रा.म.
गी

दमातेदेन गोविंदे दश प्रहपदी॥ ऊरु यउ नेदन चेद
न शिशिर तरेण करेण पयोथरे। मृग मद पत्र कम
त्र मनो भव मेगल कलश सहोदरे। निजगाद साय
उनेदने क्रीडति हृदया नेदने। दथर चेंवन लेवित क
जल मज्जलय प्रियलोचने अति कुल गोजन मेजन के
रति नायक मोचने २ नयन ऊरेण तरेण विकामिति

वासकरे श्रुति मेडले । मनसि जपाश विलास करे ३
भवेष्ट निवेशय ऊडले ३ अमर चये रचयेत मपरिरुति
रे सचिरे मम सन्मावे" जित कमले विमले परिकल्प
य नर्मजन कमल केमले ४ मर्यामद रसललिते
ललिते करु तिलक मलिक रजनी करे । विहित
कलेक कलेक मलानन विप्रमित प्रम शीकरे ५

रा.म.
गी

सम रुचिरे विकरे करुमानदमानस जधजवा मरे ॥
रति गलिते ललिते कसमा निशि खिदि शिखिद कडा
मरे ६ सर सचने जचने समशेवर दारणा केदरे । माणि
रशाना वसना भरणानि शुभाशय वासय सेदरे ॥५॥
श्रीजयदेव वचसिजयदे सदये हृदये करु मेडने ॥
हरिचरण सरणा मृतहेत कलिकलषज्वर खिडने द

श्लोक ॥ रत्नयुक्तयोः पत्रे चित्रे कुरुष्व कपोलयो
वदय जचने कोची मेव सजा कवरी भरे ॥ कलय व
लय श्रेणी पाणी पदे कुरु नृपरा विति निरादितः श्री
तः पीतो वरोपि नया करोत ६४ प्रातर्नील निचोलम
व्यत सरः सेवीत पीतो श्रुके राधाया अकिते विलो
क्य हसिति स्वेरे सखी मेडले ॥ व्रीडाचे चल मेचले न

ग.म.
गी.

यनयो राथाय राथानने खेरे सर सखिबुजोस्त जग
दा नेदाय नेदात्मजः ६५ पर्येकी कृत नाग नायक
फणा छेणी मणी नो गणी सेकोत प्रति विव सेवल
नया विशुद्धिभ प्रक्रियाम् । पादोभोरुह थारि वारि
यि सता मत्तणो दिहत्तः शतैः । कायवृह मिवाचरे
नुपविती भूतो हरिः पावक ६६ तिर्यक केद विलो

लमौलितरलोतेसस्यवेशोदर । जीतिस्थानकृताव
थानललनालदेणासेलतिताः प्रेमाकन्दलिताः
समयमथरेगयासर्वेदौसथा । सारेवोमथसू
दनस्यददत्तलेमेकदातोर्मयः । ६७ ॥ अष्टपदी ॥
सेचरदथरसथा मथरधति सार्वरित मोहनवेशे ।
चलितदृशेचलचेचलमौलिकपोल विलोलवसेते १

श-म-
गी

शसेहृदि मिह विहित विलासे । स्मरति मनोमम क
नपरिहासे चेद्रक चारु मयूर शिखिद्रक मेडल व
लपितकेशे । प्रचर प्रेदर यनरन रेजित मेडर म
दित सवेशे २ गोप कदेव तितेव वती माल चेतन
लेवित लोभे । वंश जीव मयूर थर पल्लव मलसि
तस्मित शोभे ३ विपल पुलक भजपल्लव वल्लयि

तवैल्लव सुवति सन्नसे । करचरणोरसिमणिग
णभूषणकिरणाविभिन्नतमिसे ४ जलटपट
लवलदिंड विनिंदकवेदनविंडललाटे । पीनप
योथरपरसरमहेन निर्दयहृदयकपाटे ५ मणि
मयमकरमनोहरकेडमेडितगंडमदारे । पीत
वसनमनगतमनिमलजसुगसरवरपरिवारे ६

श.म.
गी.

विशदकदेवतले मिलिते कलि कलष भये शम
येते । मामपि किमपि तरेण दत्तेण दृशा मनसा
रमयेते ७ श्रीजयदेव भणित मति सेंदर मोहन
मथुरिष रूपे । हरिचरण सारणे प्रति सेंप्रतिप्र
णवता मन रूपे । ८ ॥ श्लोक ॥ हस्त स्वस्त
विलास वेशमन्दज भूवल्लि महलवी वेंदोत्सा

रिह्योतवीलिते मतिस्वेदादी गेउस्थले । मासही
द्व विलजित स्मित स्रथा सुग्यानने कानने । गो
विंदे व्रज सेदरी गाण हते पश्यामि हृष्यामि च द्द
श्रेतमौहन मौलि चूर्णन चलत्सेदार विसेसनःस्त
वाकर्षण दृष्टि हर्षण मरु मंत्रे करेगीदृशो । दृ
णदानव ह्यमान दिविष उर्वीर उःखापदो ॥

श.म.
गी

ये सः के स रि णो व्य णो ह्य न वो शे यो सि वे शी र वः
८५ य ज्ञो य र्व क ला स कौ श ल म न थ्या ने च य दै ल वे
य न शे गार वि वे क त त्त म पि य त्का ये ष ली ला यि ते
त त्स र्वे ज य दे व पे दि त्त क वेः कृ सै क ता ना त्म नः ॥ स
ने द्यः परि शो थ ये त्त म थि यः श्री गी त गो वि द्य त्तः
५. सा धी मा धी क चि त्तान भ वन्ति भ वन्तः श क्ते र्क

केश सिद्धाक्षे दक्षेतिकेत्वा ममते मृत मसिद्धीरनी
रेरसस्ते । माकेदेकेद कोता थर पराशितले यच्छ
यच्छेति यावद्भावे श्रृंगार सारसुत मय जय देवस्य
विषग्वचासि ५१ श्री भोज देव प्रभवस्य रामादेवी
सुत श्री जय देवस्य । पयाशरादि प्रियवर्गी केहे
श्री गीत गोविन्द कवित्तमस्तु । जय श्री विमलै

श-म
गी

महिन इव मेदाय कसमैः स्वये सिंदोरा दिपिरा
मदा महिन इव । भजा पीड कीडा हत कवलया
पीडकरिणः । प्रकीर्ण हरिविड जयति भज दे
दे सरजितः ५३ ॥ इति शय मथ गीत गोवि
द परिच्छेदः समापनम् ॥ शुभेभूयान् ॥

कया सिद्धाते दत्तेतिकेत्वा ममते मृत मसि दीव
नीरे रसस्ते । माकेदे कंदकोताथर पराणितले ग
ह्य यच्छेति यावद्भावे शृंगार सारस्वत मयजय दे
वस्य विषयवचासि ५१ श्री भोज देव प्रभवस्य रा
मा देवी स्वत श्रीजय देवस्य । परा शरादि प्रियव
री केहे श्री गीत गोविंद कवित्तमस्त । जय श्री

रा-दे
गी-

विद्यसैर्मदित श्व मेदार ऊसमैः स्वये सिह्येण दि
पिरणा मदा मदित श्व । भजापीड कीडहत ऊव
लया पीडकरिणाः । प्रकीर्णा स्मिन्विडर्जयति भज
देसे मरजितः ५३ ॥ इति राग देव शाखिष्य गी
त गोविंद परिवर्द्धः समापतम् ॥